नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेपो रेट : अर्थव्यवस्था की स्थिरता का संकेत

भारतीय रिजर्व बैंक ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि मौद्रिक नीति में जल्दबाजी उसकी कार्यशैली का हिस्सा नहीं है. मौद्रिक नीति समिति ने बुधवार को संपन्न समीक्षा बैठक में रेपो रेट को 5.25 प्रतिशत पर यथावत रखने का फैसला किया है. साथ ही मौद्रिक रुख (स्टांस) भी 'न्यूट्रल' बनाए रखा गया है. यह निर्णय केवल ब्याज दरों को स्थिर रखने का नहीं, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति का संतुलित आकलन भी है. पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक अर्थव्यवस्था लगातार अस्थिरता के दौर से गुजर रही है. पश्चिम एशिया में तनाव, कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव, अमेरिका और यूरोप की मौद्रिक नीतियां तथा वैश्विक व्यापार की चुनौतियां दुनिया के अधिकांश केंद्रीय बैंकों को सतर्क बनाए हुए हैं. ऐसे माहौल में आरबीआई ने न तो ब्याज दरें बढ़ाईं और न ही उन्हें घटाया. यह निर्णय बताता है कि फिलहाल भारतीय अर्थव्यवस्था को किसी बड़े मौद्रिक हस्तक्षेप की आवश्यकता महसूस नहीं की जा रही है. इस फैसले का सबसे सीधा असर आम नागरिक पर पड़ेगा. जिन लोगों ने होम लोन, कार लोन या अन्य खुदरा ऋण ले रखे हैं, उनकी ईएमआई में कोई बदलाव नहीं होगा. बढ़ती जीवन-यापन लागत के बीच यह स्थिरता लाखों परिवारों को राहत देगी. वहीं, फिक्स्ड डिपॉजिट में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी ब्याज दरों में तत्काल किसी बड़े परिवर्तन की संभावना नहीं है. अर्थात उधार लेने वाले और बचत करने वाले, दोनों के लिए वर्तमान व्यवस्था बनी रहेगी. आरबीआई ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए जीडीपी वृद्धि का अनुमान बढ़ाकर 6.7 प्रतिशत कर दिया है. यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का संकेत है. घरेलू मांग, सेवा क्षेत्र, विनिर्माण गतिविधियों और सरकारी पूंजीगत निवेश ने विकास की गति को बनाए रखा है. दूसरी ओर, खुदरा महंगाई का अनुमान घटाकर 5.0 प्रतिशत करना यह दर्शाता है कि मूल्य नियंत्रण की दिशा में भी स्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक है. फिर भी यह मान लेना भूल होगी कि सभी चुनौतियां समाप्त हो चुकी हैं. भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए अभी भी बड़े पैमाने पर आयातित कच्चे तेल पर निर्भर है.

यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होता है या वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित होती है, तो महंगाई पर दबाव बढ़ सकता है. ऐसे में आरबीआई के पास भविष्य में ब्याज दरों को लेकर नए निर्णय लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहेगा. इसलिए वर्तमान स्थिरता को स्थायी स्थिति मानना उचित नहीं होगा. इस मौद्रिक नीति का सबसे महत्वपूर्ण संदेश 'विश्वास के साथ सतर्कता' है. केंद्रीय बैंक ने यह संकेत दिया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत आधार पर खड़ी है, लेकिन वैश्विक जोखिमों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. यही कारण है कि उसने विकास को प्रोत्साहन देने और महंगाई पर नियंत्रण बनाए रखने के बीच संतुलित रास्ता चुना है. भारतीय अर्थव्यवस्था आज दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है. ऐसे समय में नीतिगत स्थिरता स्वयं निवेशकों का विश्वास बढ़ाती है. उद्योग जगत को भविष्य की योजना बनाने में सुविधा मिलती है और उपभोक्ताओं को भी आर्थिक निर्णय लेने में अनिश्चितता का सामना नहीं करना पड़ता. रेपो रेट को स्थिर रखने का निर्णय इसलिए केवल ब्याज दरों का मामला नहीं है. यह भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती, आरबीआई की दूरदर्शिता और संतुलित आर्थिक प्रबंधन का संदेश है. यदि सरकार संरचनात्मक सुधारों और निवेश को गति देती रही तथा महंगाई नियंत्रण में बनी रही, तो आने वाले वर्षों में भारत की विकास यात्रा और अधिक मजबूत आधार पर आगे बढ़ सकती है.

छोटा चुनाव बड़ा संकेत

भाजपा का अतिआत्मविश्वास या वजह और..?

ऋतुपर्ण दवे

> सर्वविदित है कि प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के नेतृत्व और पार्टी के चुनावी प्रबंधन के लिहाज से भी यह चुनाव भाजपा के लिए अग्नि परीक्षा माना जा रहा था, जिसमें वह विफल रही. मांजलपुर सीट से भाजपा की प्रचण्ड मतों से जीत ने पार्टी के लिए जश्न का मौका जरूर बरकरार रखा. हाँ, कोई माने या न माने भले ही सार्वजनिक न हो लेकिन अन्दरूनी तौर पर भाजपा भी गुटबाजी से उबर नहीं पा रही है. जेन-जी आन्दोलन, पेपर लीक और भी कुछ मुद्दों पर पार्टी में अलग-अलग विचार समझ आने लगे हैं. इन चुनाव नतीजों के बाद स्थिति-परिस्थित क्या बनेगी, इसके लिए थोड़ा इंतजार करना होगा.

तीन अगस्त को तीन राज्यों के तीन नतीजे बहुत बड़े संकेत हैं. निश्चित रूप से बिहार का नतीजा जहाँ सत्ताधारी दल के लिए हैरान और परेशान करने वाला रहा. वहीं मध्यप्रदेश का नतीजा सत्ताधारी दल की अन्दरूनी गुटबाजी का परिणाम रहा. गुजरात में भाजपा की जीत स्वाभाविक कही जा सकती है. सबसे चर्चित जीत रही प्रशान्त किशोर उर्फ पीके की, क्योंकि राज्य की जनता को विकल्प के तौर पर एक नया दल जनसुराज जो मिल गया. पहले बिहार वासियों के पास दो ही विकल्प थे. राजद और भाजपा. राजद से मोहभंग हो गया था और पीके मतदाताओं के बीच अपनी जगह बनाने की कवायद कर रहे थे. हालाकि बीते विधानसभा चुनाव में उनका एक भी प्रत्याशी नहीं जीता और वो खुद चुनाव में खड़े नहीं हुए. लेकिन बिहार की नब्ज को टटोलते रहे. इसी बीच नितिन नबीन के भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद उनकी बांकीपुर सीट खाली हुई जो पीके लिए मौके पर चौका लगाने जैसा रहा. हाँ, उन्होंने छक्का जरूर जड़ दिया ये बात अलग है. बांकीपुर सीट पटना के शहरी इलाके की है जिसे शुरू से ही भाजपा का मजबूत गढ़ माना जाता रहा. इस नतीजे ने न केवल यह मिथक तोड़ा बल्कि भाजपा में खलबली मचा दी. माना जा रहा है कि पेपर लीक और परीक्षाओं में धांधलियों के चलते युवाओं की नाराजगी और जंतर-मंतर पर चले लंबे आन्दोलन ने भी भाजपा की छवि पर डेन्ट लगाया. इधर भाजपा अति आत्मविश्वास में थी और यह समझने में नाकाम रही कि हवा हमेशा एक ही दिशा में नहीं बहती. चंदा चोरी और जेन-जी आन्दोलन के बीच भाजपा ने अपने 40 स्टार प्रचारक उतार दिए. लेकिन राजद के चार सांसद तक बांकीपुर नहीं पहुंचे. इतना ही नहीं नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव तो विदेश चले गए जिन्होंने आखीर-आखीर में रोड शो किया. लेकिन तब तक बांकीपुर के मतदाताओं को यह समझना आसान हो गया कि तेजस्वी यादव और राजद अपने उम्मीदवार को लेकर गंभीर नहीं है. संकेत साफ रहा मतदाता को कहीं और शिफ्ट होना था. विकल्प के तौर पर पढ़ा लिखा, राजनीति को समझने-जानने वाले रणनीतिकार के रूप में पीके का नाम था इसलिए ज्याद सोचने-समझने के बजाए बिहार और देश के हालातों को देखते हुए मतदाताओं ने इस छोटे से चुनाव में बड़ा संदेश दे दिया. भाजपा को नुकसान पहुंचाने में भरत तिवारी एनकाउंटर मामला भी माना जा रहा है. इस एनकाउंटर ने न केवल युवाओं बल्कि खुल कर भाजपा के सवर्ण विरोधी होने को जबरदस्त हवा दी. भाजपा के तमाम जिम्मेदारों और रणनीतिकारों ने भाजपा विरोधी माहौल को थामने और बदलने की कोशिश की पर यह हो न सका. अंतत: जीत भाजपा के हाथ से निकल गई और कई दशकों से भाजपा की परंपरागत कहलाने वाली बांकीपुर और राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन के कारण अतिप्रतिष्ठत हुई सीट हाथ से निकल गई. अब बिहार की राजनीति को समझने वाले यह कह रहे हैं कि पीके भाजपा सरकार, विशेषकर सम्राट चौधरी के लिए सदन के अन्दर भी और बाहर भी मुश्किलें बढ़ाएंगे क्योंकि ब उनका मकसद सिर्फ विधायकी नहीं बल्कि अपनी पार्टी को बिहार में नया मुकाम जो देना है. कमोवेश यही स्थिति मध्यप्रदेश के दतिया में रही. 2023 में हुए विधानसभा चुनाव में दतिया से नरोत्तम मिश्रा की हार के बाद भाजपा के अन्दरूनी हलकों में कहीं खुशी, कहीं गम का माहौल था. लेकिन वहां से चुने गए कांग्रेस विधायक राजेंद्र भारती को बैंक धोखाधड़ी मामले में दोषी ठहराए जाने और सजा हो जाने के बाद अप्रैल में अयोग्य घोषित कर दिए जाने से हुए उपचुनाव में घनश्याम सिंह ने कांग्रेस से चुनाव लड़कर सीट को बरकरार रखा. लेकिन इसमें सबसे ज्यादा बिना चुनाव लड़े मुश्किल नरोत्तम मिश्रा की हुई. जिन्होंने चुनाव से काफी पहले ही प्रचार और जनसंपर्क बढ़ा दिया था. लेकिन ऐन वक्त पर उन्हें टिकट नहीं मिली. जिस कारण यह सीट बहुत ही बड़ी प्रतिष्ठा का कारण बन गई. नरोत्तम मिश्रा की स्थिति न उगल पाने, न निगल पाने जैसी हो गई. यदि यहाँ से भाजपा जीतती तो उनका राजनीतिक कद घटता और अब काँग्रेस जीत गई है तो भी उनके राजनीतिक भविष्य पर सवाल उठ रहे हैं. निश्चित रूप से नरोत्तम मिश्रा का कद देखते हुए उनकी मंशा और उनके समर्थक इस मतदान के दौरान किस निर्णय पर पहुंचे होंगे, कहने की जरूरत नहीं. लेकिन नरोत्तम मिश्रा की मुसीबतें तो बढ़ीं. कांग्रेस की जीत के बाद प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी की संगठन में स्थिति और मजबूत होगी. कांग्रेस के लिए भी यह चुनाव बेहद खास था क्योंकि करीब साल भर से संगठन को मजबूत करने और नए नेतृत्व को आगे बढ़ाने के लिए काँग्रेस जबरदस्त संघर्ष कर रही थी. अब यह जीत संजीवनी का काम करेगी. हालाकि काँग्रेस ने चुनाव को त्रिकोणीय बनाने की कोशिश कर आजाद समाज पार्टी ने दामोदर सिंह यादव को मैदान में उतारा था फिर भी मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच ही रहा.

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार और स्तंभकार हैं)

बांकीपुर का किला ध्वस्त होने से स्तब्ध है भाजपा

कृष्णमोहन झा

> दरअसल बांकीपुर उपचुनाव में भाजपा के लिए अपशकुन के संकेत तो उसी दिन मिल गए थे जब भाजपा ने अपने पहले घोषित प्रत्याशी अभिषेक बंटी के स्थान पर नवीन सिन्हा को प्रत्याशी घोषित किया। यूँ तो अभिषेक बंटी ने पारिवारिक कारणों से चुनाव मैदान से हटने की घोषणा की थी परन्तु असली कारण कुछ और ही थे जिनकी वजह से भाजपा ने उनकी जगह नवीन सिन्हा को चुनाव मैदान में उतारा लेकिन प्रशांत किशोर के कद के सामने नवीन सिन्हा हर मामले में बौने साबित हुए। वे कभी भी न तो कैमरे के सामने सहज दिखाई दिए ,न ही प्रशांत किशोर के तर्कों की कोई काट प्रभावी तरीके से मतदाताओं के सामने रख पाए। चुनाव प्रचार के दौरान प्रशांत किशोर ने अपने एक बयान में दावा किया था कि भाजपा बांकीपुर में इतने वोट से हारेगी कि वह फिर जीवन भर यह कहने का साहस नहीं करेगी कि हम यहाँ से कुत्ते बिल्ली को भी खड़ा कर दें तो उसे जिता ले जाएंगे।हालांकि भाजपा की ओर से पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर ने ऐसे किसी भी बयान का खंडन करते हुए कहा कि उनकी पार्टी अपने हर कार्यकर्ता का सम्मान करती है परंतु प्रशांत किशोर ने पूरे चुनाव में इसे भाजपा का बयान बयान बता कर इसे न केवल एक बड़ा चुनावी मुद्दा बना लिया बल्कि वे बांकीपुर के मतदाताओं को भी अपनी बात से सहमत करने में सफल रहे।

हाल में ही देश के तीन राज्यों मध्यप्रदेश, गुजरात एवं बिहार की एक एक विधानसभा सीट के लिए हुए उपचुनाव में भाजपा को केवल एक सीट से ही संतोष करना पड़ा। गुजरात की इस मांजलपुर विधानसभा सीट पर उसकी जीत पहले से ही तय मानी जा रही थी।

मध्यप्रदेश की दतिया और बिहार की बांकीपुर सीट के लिए हुए उपचुनाव में भी भाजपा को अपनी जीत का पूरा भरोसा था परन्तु इन दोनों ही सीटों पर उसे हार का सामना करना पड़ा।दतिया की सीट तो भाजपा के पास पहले भी नहीं थी इसलिए दतिया उपचुनाव में अपनी हार से वह शायद उतनी गमगीन नहीं है,लेकिन बिहार के बांकीपुर में मिली अप्रत्याशित पराजय ने उसे स्तब्ध कर दिया है।पिछले तीस साल से भाजपा के कब्जे में रही उसकी इस सुरक्षित सीट पर भाजपा को जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने जो शिकस्त दी है उसकी चर्चा अगर सारे देश में हो रही है तो इसका एकमात्र कारण यह है कि भाजपा के वर्तमान अध्यक्ष नितिन नबीन ने यहाँ से लगातार पांच चुनाव जीत कर इस विधानसभा क्षेत्र को भाजपा का अभेद्य किला बना दिया था परन्तु जब उन्होंने बांकीपुर सीट छोड़ कर राज्य सभा की सदस्यता ग्रहण कर ली तो उसके बाद हुए पहले ही चुनाव में भाजपा के हाथ से वह सीट निकल गई जिसे बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने भाजपा का किला बताया था।जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने बांकीपुर उपचुनाव में अपनी जीत के बाद कहा कि भाजपा के तीस साल के किले को हमने तीस दिनों में ध्वस्त कर दिया। गौर तलब है कि प्रशांत किशोर का यह पहला चुनाव था जिसमें उन्होंने 19 हजार मतों के अंतर से भाजपा उम्मीदवार नवीन सिन्हा को हराया।

यहाँ विशेष रूप से रेखांकित किए जाने योग्य बात यह है कि प्रशांत किशोर द्वारा गठित जन सुराज पार्टी ने बिहार विधानसभा चुनावों में 243 सीटों में से 238 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे जिनमें 236 सीटों पर उसे शोचनीय हार का सामना करना पड़ा था । बिहार विधानसभा के गत चुनावों में प्रशांत किशोर ने खुद चुनाव लड़ने से परहेज किया था। बांकीपुर उपचुनाव जीतने के बाद प्रशांत किशोर बिहार विधानसभा में अपनी पार्टी के इकलौते विधायक होंगे। यूँ तो राज्य विधानसभा में भाजपा की एक सीट कम हो जाने से मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की सरकार की स्थिरता पर निकट भविष्य में कोई प्रभाव पड़ने की बात सोचना अभी जल्दबाजी होगा परन्तु मुख्यमंत्री की कुर्सी पर सम्राट चौधरी के बैठने के बाद हुए पहले उपचुनाव में पार्टी की अपमानजनक पराजय ने मुख्यमंत्री पद पर उनके चयन ने जरूर सवाल खड़े कर दिए हैं दरअसल ये सवाल तो तभी उठने लगे थे जब भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को राज्य सभा में भेजकर सम्राट चौधरी को उनका उत्तराधिकारी मनोनीत करने का फैसला किया था। राजनीतिक पंडितों ने भी उस समय इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया था कि जब तब अपने बयानों से विवादों में बने रहने वाले सम्राट चौधरी को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाने के पीछे भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व की वास्तविक मंशा आखिर क्या है।सम्राट चौधरी ने जिस दिन मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली उसी दिन से यह संकेत मिलने लगे थे कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर सम्राट चौधरी के बैठने से राज्य की जनता खुश नहीं है और वे राज्य में कभी भी पार्टी का लोकप्रिय चेहरा बनने में सफल नहीं हो पाएंगे। बांकीपुर उपचुनाव के नतीजे भी शायद इसी संकेत को दोहरा रहे हैं।

मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पूरे समय इस अति आत्मविश्वास का शिकार बने रहे कि बांकीपुर में भाजपा के मजबूत किले में सेंध लगाने की ताकत किसी दल में नहीं है। उनके इसी मुगालते ने भाजपा की जीत की संभावनाओं को धूमिल कर दिया। दिल्ली में जंतर मंतर पर हुए छात्र आंदोलन के समर्थन में बिहार के अनेक शहरों में हुए युवाओं के प्रदर्शन से निपटने के लिए राज्य की पुलिस ने जो बलप्रयोग किया उसने बांकीपुर में भाजपा के विरोध में माहौल बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। गौरतलब है कि बांकीपुर के मतदाताओं में एक तिहाई मतदाता युवा हैं। बांकीपुर में गत चुनाव में 41 प्रतिशत मतदान हुआ था जो इस बार घटकर 35 प्रतिशत रह गया। ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा के समर्थक मतदाताओं का एक बड़े वर्ग अपने मताधिकार के प्रयोग के प्रति उदासीन रहा।उप चुनाव के कुछ ही समय पहले पुलिस एनकाउंटर में भरत तिवारी की मृत्यु से भड़के आंदोलन से पार्टी की चुनाव संभावना ओं पर पडने वाले प्रतिकूल प्रभाव का सम्राट चौधरी की सरकार सही आकलन करने से चूक गई। मुख्यमंत्री ने इस घटना के लिए जिम्मेदार पुलिस कर्मियों पर जब कड़ी कार्रवाई की तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

कविता

गर दिल है तो धड़कना भी चाहिए,
हाथ मदद को फड़कना भी चाहिए।
पराये आँसू देख के चुप रह न जाइए,
इंसानियत के लिए तड़पना भी चाहिए।
नफ़रत की आग यूँ बुझ जाए मित्रों
उल्फ़त का दीप भड़कना भी चाहिए।
सिर्फ़ आरजू से मंजिलें मिलती नहीं जनाब,
राहों में खुद को खपना भी चाहिए।
रोटी अगर मिली है मुकद्दर से आपको
भूखो के साथ बराबर बँटना भी चाहिए।
सच की चाहत तो हर दौर में है हमें,
ज़ालिमों के सामने कड़कना भी चाहिए।
संजीव दुआ है आदमी का दिल
संवेदना में धड़कना भी चाहिए।

संजीव ठाकुर

ग्वालियर-चंबल की डायरी

दतिया : कइयों का कैरियर चौपट कुछ को मिली संजीवनी

हरीश दुबे

दतिया का नतीजा आ गया। यह पहला उपचुनाव है जिसमें दोनों मुख्य प्रतिद्वंद्वी दल अपनों से ही परेशान रहे और चुनाव प्रचार के साथ घर में बैठे भितरघातियों की तलाश में जुटे रहे। कांग्रेस प्रत्याशी ने तो नतीजा आने के पहले ही तीन बार के निवर्तमान विधायक पर भाजपा से सांठगांठ और भितरघात करने के आरोप लगाकर पार्टी से निकलवा दिया। भाजपा में अनुशासन का डंडा शिकस्त खाने के बाद चला और पूरी जिला कार्यकारिणी ही भंग कर दी गई। दतिया के इस उपचुनाव में भले ही भाजपा से आशुतोष तिवारी और कांग्रेस से घनश्याम सिंह उम्मीदवार थे लेकिन पूरे चुनाव अभियान में नरोत्तम मिश्रा ही केंद्रबिंदु बने रहे। यह माना गया कि उक्त उपचुनाव का नतीजा नरोत्तम का राजनीतिक भविष्य निर्धारित करेगा। भाजपा यदि दतिया में विजयश्री का वरण करती तो नरोत्तम के प्रदेश या राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक पुनर्वास की संभावनाएं बनी हुई थीं लेकिन दतिया के नतीजे ने उनके सियासी सफर को लॉक कर दिया। नरोत्तम यह समझ चुके हैं, लिहाजा उन्होंने नतीजा आते ही अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति से संन्यास का ऐलान कर दिया। उनके शब्दों मे 'मेरी राजनीति का अब पटाक्षेप हो गया है'। हालांकि, नरोत्तम इसे फाइनल पटाक्षेप नहीं मानते। नरोत्तम की मानें तो उनकी अब कोई बड़ा पद लेने की इच्छा नहीं है और कार्यकर्ता के रूप में काम करेंगे। नतीजा आने के बाद सीएम हाउस में बड़ी समीक्षात्मक बैठक हो चुकी है। प्रदेश संगठन ने दो सदस्यीय जांच कमेटी भी बना दी है। नरोत्तम समर्थकों के एकाधिकारिक वर्चस्व वाले दतिया जिला भाजपा की संगठनात्मक संरचना को शून्य घोषित कर दिया गया है। बहरहाल, विधानसभा चुनाव में ढाई साल से भी कम वक्त बचा है, अगले साल स्थानीय निकायों के चुनाव भी होना है, सभी का आंकलन इस बात पर है कि दतिया का जनादेश भविष्य की इन राजनीतिक चुनौतियों को किस हद तक प्रभावित करेगा। प्रदेश की सत्ता और उसके पार्टी संगठन ने इन चुनावों को सबक के रूप में लिया है और कमियों की तलाश कर भविष्य के लिए खुद को कसा जा रहा है। वहीं करीब साल भर पहले विजयपुर उपचुनाव जीतने के बाद अब दतिया में भी परचम फहराने के बाद कांग्रेस जोश से भरी हुई है। आज बुधवार की शाम दतिया की सड़कों पर जीतू पटवारी, घनश्याम सिंह और अन्य बड़े नेताओं के नेतृत्व में निकले विजय जुलूस में जिस जोश खरोश के साथ भीड़ उमड़ी, उससे जाहिर होता है कि दतिया उपचुनाव ने कांग्रेस के लिए संजीवनी का काम किया है। देखना है कि इस उत्साह को कांग्रेस कब तक बरकरार रख सकेगी और भाजपा कथित भितरघातियों पर क्या कड़े कदम उठाती है।

महंगा पड़ा साजिश रचना...

चुनाव से एक दिन पहले भाजपा प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल का एक फर्जी लेटर सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, इसमें बताया गया था कि दतिया के भाजपा जिलाध्यक्ष रघुवीर कुशवाहा को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया है। इस पूरे लेटर को दतिया के ही एक साहब द्वारा बनाया गया था और सोशल मीडिया पर वायरल किया गया था। कहा जा रहा है कि इस लेटर पर कुशवाहा समाज ने यकीन कर लिया, कुशवाहा समाज का वोट काफी कांग्रेस में चला गया और भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। दतिया में हुई हार के बाद सत्ता शीर्ष और प्रदेश संगठन बहुत ही गुस्से में है. इसके बाद उस लेटर को जारी करने वाले सहित तीन लोगों को भोपाल क्राइम ब्रांच ने उठा लिया है. ये सभी दतिया के ही एक दिग्गज की टीम के हैं। हालांकि कल हुई अहम बैठक के बाद रघुवीर कुशवाहा सहित दतिया के सभी पदाधिकारियों को पदच्युत कर दिया गया है। अगले 72 घंटो के अंदर कुछ और बड़े चेहरों को भी बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा। खबर यह भी है कि पराजित प्रत्याशी आशुतोष तिवारी को दतिया भाजपा का नया सदर बनाया जा सकता है ताकि 28 के लिए वे स्थानीय संगठन पर पकड़ बना सकें।

चंबल में महिला कांग्रेस को मिला नया नेतृत्व

काफी मशक्कत और कई महीनों तक चली मशक्कत के बाद ग्वालियर चंबल के तमाम जिलों में महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्ष नियुक्त कर दी गईं हैं। अंचल की कई महिला नेत्रियां यह ओहदे पाने की दौड़ में थीं। यह नियुक्तियां सीधे अलका लांबा के दिशा निर्देशन में सूबा सदर रीना बोरासी ने की हैं। दावा तो यही किया जा रहा है कि पार्टी के प्रति निष्ठावान और वर्षों से भाजपा के खिलाफ आंदोलनों में बढ़चढ़कर अग्रणी भूमिका निभाने वालीं पुरानी कार्यकर्ताओं को ही मौका दिया गया है। भिंड शहर की अध्यक्ष बनाई गईं शान्ति कुशवाहा अर्से से भिंड सदर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ने के लिए तैयारी कर रहीं हैं। हालांकि वे लहार की बहू हैं लेकिन उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र भिंड शहर को बनाया हुआ है। ग्वालियर शहर में ज्योति सिंह, मुरैना शहर में ममता कुशवाहा तो मुरैना देहात में मंजू सिकरवार को अध्यक्षी मिली है। इनकी भी पार्टी के प्रति निष्ठा असंदिग्ध मानी जाती है। कांग्रेस में युवा कांग्रेस के बाद महिला कांग्रेस को ही सबसे बड़ा मोर्चा संगठन माना जाता है। महाराज के कांग्रेस छोड़ने के बाद से महिला कांग्रेस का जो संगठनात्मक आधार कमजोर हुआ है, उसे फिर से दुरुस्त कर मिशन 28 के लिए मुकाबिल करने की अहम जिम्मेदारी नई सदर साहिबानों पर होगी।

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. मन में कुछ उद्विग्नता रहेगी. व्यापारिक स्थिति सामान्य रहेगी. वर्ष केमध्य में महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र मेंसफलता मिलेगी. पत्नी के स्वास्थ्य की चिन्ता रह सकती है. व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी. वर्ष के अन्त में बैवारिक विवाद होगा. व्यय में वृद्धि होगी. प्रियजनों का आगमन सत्संग से मन शांत रहेगा. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को बैचारिक विवाद होगा. व्यय में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र में विस्तार होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी. मन में उद्विग्नता रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को सामान्य सफलता के योग है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. व्यर्थ भागदौड़ रहेगी.

मेष- परिचितों के कारणआपको कार्य करने में मुश्किल आ सकती है. वाद विवाद हो सकता है.

वृषभ- पारिवारिक परेशानी दूर होने से शांति मिलेगी. नए लोग आपसे जुड़ने का प्रयास करेंगे.

मिथुन- विरोधियों की चाल से नुकसान की संभावना है. सतर्क रहकर कार्य करें.

कर्क- अनजान लोगों पर अधिक भरोसा नुकसान में डाल सकता है. फोन पर शुभ संदेश मिलेगा.

सिंह- जल्दी काम निवटाने के लिये किसी का सहयोग लेना पड़ेगा. सफलता मिलेगी.

कन्या- साझेदारी में कोई बड़ी योजना शुरू कर सकते हैं. कैरियर में आ रही बाधा दूर होगी.

तुला- मामूली सी बात पर मित्रों से कहासुनी हो सकती है, बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी.

वृश्चिक- शिक्षा के मामले में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा. तो सफलता मिलेगी.

धनु- भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. कार्यस्थल की बाधायें दूर होंगी.

मकर- आप मन में किसी बात को लेकर भयभीत हो सकते हैं.

कुम्भ- व्यापार विस्तार की संभावना बनेगी. कामकाज में देरी हो सकती है.

मीन- कार्यक्षेत्र में आ रही दिक्कतें दूर होंगी. छोटे छोटे झगड़े बड़े विवाद का कारण बन सकते हैं..

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, हष्टपुष्ट तथा बचपन में ज्वर, विकार, निमोनिया आदि से तकलीफहो सकती है, बाद में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. किसी तकनीकी शिक्षा का ज्ञाता होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

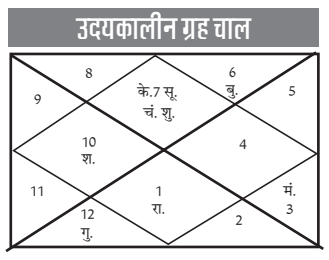

पंचांग

रा.मि. 15 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण अष्टमीं गुरूवासरे दिन 3/25, भरणी नक्षत्रे शाम 6/1, गण्ड योगे दिन 1/49, कौलव करणे सू.उ. 5/27, सू.अ. 6/33, चन्द्रचार मेष रात 11/39 से वृषभ, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण अष्टमीं को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से अलसी, अरंडी, बिनौला, मूँगफली, घी तिल, गुड़, खांड़, शक्कर, में तेजी होगी. सभी धातु वस्तुओं में उतार चढाव आयेगा. व्यापार बाजार की लाईन देखकर कार्य करें. भाग्यांक 3720 है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी